कार्यालय प्राचार्य, माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

International Conference

Embracing the other : Rediscovering Mahatma Gandhi and the Power of Non- Violence

माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयन्ति वर्ष में Embracing the other : Rediscovering Mahatma Gandhi and the Power of Non- Violenceपर दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन 20–21 सितम्बर 2019 हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के पूर्व प्रोफेसर आनन्द कुमार ने कहा कि देश में दिनरात सुबह से देर रात्रि तक प्रतिक्षण हिंसा का प्रशिक्षण चल रहा है। यदि देश का सही अर्थों में निर्माण करना है तो नियमित तौर पर अहिंसा के प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने कहा कि हिंसा का बीज आर्थिक, सामाजिक असमानता में निहित है। जब तक यह असमानता नहीं मिटेगी देश विल्पन की ओर बढ़ता रहेगा। प्रोफेसर आनन्द कुमार ने कहा कि गांधी का चिन्तन गहन अध्ययन पर आधारित था। उन्होंने जो रास्ता देश को दिखाया वह उनके अपने अध्ययन प्रयोगों व अनुभवी से सृजित हुआ। सम्मेलन के मुख्य वक्ता प्रो. सुधीर चन्द्रा ने कहा कि गांधी का रास्ता एक कठिन रास्ता है। उन्होंने किसी को पराया या शत्रु माना ही नहीं । उनकी दृष्टि से विचार करें तो यदि पाकिस्तान नर्क हैं तो भारत कभी स्वर्ग हो ही नहीं सकता। उन्होंने कहा कि देश ने गांधी की अहिंसा को कभी माना नहीं। हर व्यक्ति के भीतर गांधी व गोडसे दोनो है। शिक्षण संस्थाओं का दायित्व यह है कि वो विद्यार्थियों में गांधी के मानवीय व अहिंसक गुणों को पल्लवित व पोषित करने का काम करें। उन्होंने गांधी के उस कथन की ओर ध्यान दिलाया कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. सब्रतो मुखर्जी, दिल्ली विश्वविद्यालय ने कहा कि भारत ही नहीं दुनिया में औपनिवेशवाद के विरूद्व संघर्ष का कोई भी इतिहास गांधी के उल्लेख के बिना पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि गांधी को उनकी समग्रता में समझा जाना चाहिए व उनकी आलोचनात्मक

व्याख्या भी की जानी चाहिए। ख्यात समाजशास्त्री राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. राजीव गुप्ता ने महात्मा गांधी की अहिंसा को मिलिटेंट नॉन वायलेन्स की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि अहिंसा निर्भय दृढ़ता पूर्ण संघर्ष गांधी जी की अहिंसा का आधार है। उन्होंने कहा कि विराट व्यक्त्वि के अनेक अनछुए पहलू है जिन पर विचार संभव है। जैसे गांधी की नजर में बच्चे, बच्चों की नजर में गांधी। भीलवाड़ा जिला मजिस्ट्रेट एवं कलक्टर राजेन्द्र कुमार भट्ट ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर के विद्वान जिनकी पुस्तकें पढ़कर वे कलक्टर बने, आज उन्हें सामने पाकर हम गद्‌गद हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा स्तरीय सम्मेलन उन्होंने भीलवाड़ा में पिछले एक वर्ष में नहीं देखा। मोहन लाल सुखड़िया विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. संजय लोढ़ा ने कहा कि गांधी की प्रयोगशीलता ही उनकी विशिष्टता हैं वे अध्ययन करते है, प्रयोग करते है, अनुभव करते हैं और तब एक लोकतांत्रिक बहुलतावादी समाज की रूपरेखा बनाते हैं। उनके विरोधी बार–बार उनकी हत्या करने का प्रयास करते हैं और बार–बार गांधी विराट होकर उभरते हैं। उद्‌घाटन सत्र के अध्यक्ष गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के श्री कुमार प्रशान्त ने कहा कि डेढ़ सौ वर्ष बाद भी यदि गांधी आज पूरे विश्व में चर्चा के केन्द्र में विकल्प की चर्चा होगी हमे गांधी की याद आयेगी। गांधी हमारे सामने उत्पन्न समस्याओं के समाधान का विकल्प सुझाते है। हम चाहे उन्हें अपनाऐं या न अपनाऐं, हमारे सामने विकल्प गांधी रखते है। आज जब विश्व पूंजीवाद के चरम पर भोगवाद के जाल में जकड़ा है तब गांधी का संयम का मार्ग हमें एक विकल्प देता है । कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. इन्दुबाला बापना ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया । विभागाध्यक्ष डॉ. शैलजा उपमन्यु ने अतिथियों का परिचय दिया। डॉ. ममता चांवरिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संयोजन डॉ. अनन्त दाधीच ने किया। सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. पयोद जोशी ने आयोजन विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। उद्‌घाटन सत्र के बाद दो विशेष सत्र आयोजित किए गए जिसमें श्री कुमार प्रशान्त व प्रो. आनन्द कुमार ने उद्‌बोधन दिया। इन सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजीव गुप्ता व प्रो. संजय लोढ़ा ने की। प्रो. बी.के. नागला, रोहतक ने विषय निष्णांत के रूप में अपने विचार व्यक्त किए। संचालन प्रो. आलोक श्रीवास्तव ने किया।

सम्मेलन के दूसरे दिन प्रसिद्व सामाजिक कार्यकर्त्ता श्रीमती अरूणा रॉय ने मुख्य अतिथ्य में समापन–सत्र आयोजित हुआ। श्रीमती अरूणा रॉय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि

सवाल उठाना हमारी परम्परा का हिस्सा है। उन्होंने नचिकेता की कहानी उदृत् करते हुए कहा कि सवाल न उठाने वाला समाज जड़ हो जाता हैं। उन्होने सवाल उठाया कि हमें हमारे देश में व्याप्त विषमताओं के बारे में सवाल क्यों नहीं उठाने चाहिए ? सरकारों का दायित्व है कि वे जनता के सवालों का जवाब दें। गांधी भी व्यवस्था से सवाल कर रहें थें। गांधी मात्र एक व्यक्ति नहीं, विचार थें। समापन–सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए पूर्व कुलपति और प्रसिद्व राजनीतिशास्त्री प्रोफेसर नरेश दाधीच ने '**दूसरे**' की अवधारणा को विस्तार से समझाते हुए कहा कि समाज में यदि कोई दूसरा नही है तो हमारा अस्तित्त्व भी नही है, इसलिए हमें दूसरों को गले लगाना आना चाहिए। इस सत्र की अध्यक्षता राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सवाई सिंह जी ने की, जिन्होंने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में आने वाली पीढ़ी में गांधी की समझ विकसित करने की बात की। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में भीलवाड़ा के पुलिस महानिरीक्षक हरेन्द्र कुमार महावर भी उपस्थित रहे। संचालन अनन्त दाधीच ने किया।

इससे पूर्व दूसरे दिन प्रातःकाल 14 तकनीकी सत्र् अलग–अलग कमरों मे आयोजित किये गये। जिनमे करीब 300 शोधपत्रों का वाचन हुआ । दोपहर में दो प्लेनरी सत्र् आयोजित हुए। पहले प्लेनरी सत्र् में बोलते हुए राजनीति शास्त्र के विद्वान डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हिंसा हमारे जीवन का तथ्य है, किन्तु मूल्य नही हो सकता। उन्होंने कहा कि शासन तलवार के बल पर हासिल किया जा सकता है, किन्तु चलाया नहीं जा सकता। इसे चलाने के लिए जनता की सहमति आवश्यक होती है। इसी सत्र् में बोलते हुए राजस्थान जनवादी लेखक संघ के अध्यक्ष प्रो. जीवन सिंह मानवी ने कहा कि जो अदृश्य हिंसा है, उसका मुकाबला करना चुनौतिपूर्ण है। हिंसा का मुख्य कारण मनुष्य अन्तःकरण की संकीर्णता है। राजस्थान विश्वविद्यालय की प्रोफेसर रेणु व्यास ने कहा कि गांधी का सत्य एवं अहिंसा के प्रति अनुराग, मानवता एवं उदारता का प्रतीक है यदि आज गांधी होते तो हिंसा का सामना अहिंसा से, भय का सामना अभय से, घृणा का सामना प्रेम से करेगे । सत्र् की अध्यक्षता करते हुए प्रो. बी.के. नागला ने कहा कि गांधी एक राजनीतिक नेता होने के साथ–साथ चैतन्य विचारक भी थे। सत्र् का संचालन प्रो. हेमेन्द्र चंडालिया ने किया।

दूसरे प्लेनरी सत्र् में मुख्य उद्बोधन प्रसिद्व समाजशास्त्री, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. अविजित पाठक का हुआ । प्रो. अविजित पाठक ने अधिकारिक गांधी

और जन के गांधी के मध्य भेद को रेखांकित किया । गांधी में एक खुलापन था, वे अपने विरोधियों से भी संवाद को तैयार रहते थें। गांधी प्रयोगधर्मी थे, जो स्वयं पर प्रयोग कर दूसरे को बदल देने की क्षमता रखते थे। गांधी स्वयं को भीतर से बदलने को तैयार रहते थे इसलिए दूसरों को बदल पाना उनके लिए आसान था। इस सत्र् में बोलनते हुए डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि भारत की विचार परम्परा में दूसरा कोई नहीं हैं, यहां दूसरे की अवधारणा अनुपस्थित रही है और गांधी इसी भारतीय परम्परा के संवाहक है। इस सत्र् की तीसरी वक्ता राजस्थान राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर लाड कुमारी जैन ने कहा कि हमारे यहॉ महिलाओं, दलितो, किसानों, मजदूरों को सदियों से दूसरा बनाकर रखा गया है। गांधी का संघर्ष इन दूसरों को समाज की मुख्य धारा में मिला लेने का संघर्ष था। वर्तमान समय में सामाजिक विभाजन गहरे हो रहे हैं।, ऐसे में गांधी के संघर्ष को पुर्नजीवित करना आवश्यक है। इस सत्र् की अध्यक्षता करते हुए प्रो. आर.पी. जोशी ने कहा कि गांधी की सादगी से हम आज के दौर की उपभोक्ता संस्कृति के दुष्परिणामों से उत्पन्न परिस्थिति का मुकाबला कर सकते है। प्रोफेसर अरूण चतुर्वेदी ने गांधी की उपादेयता को लेकर विचार व्यक्त किए। सत्र् का संचालन प्रो. अनन्त भटनागर ने किया।

इस सम्पूर्ण सम्मेलन के मुख्य संयोजक और आयोजन सचिव डॉ. पयोद जोशी ने बतलाया कि सम्मेलन में कुल 574 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें आचार्य, सह आचार्य, सहायक आचार्य, शोधपत्र, सामाजिक कार्यकर्त्ता आदि समिति थें। दो दिन तक चले सम्मेलन में उद्घाटन व समापन सत्र् के अतिरिक्त तीन प्लेनरी सत्र् तथा 14 तकनीकी सत्र् के आयोजित हुए । सम्मेलन में उपर्युक्त वक्ताओं के अतिरिक्त जानी मानी लेखिका गीतांजलि श्री, जाने माने साहित्यकार आईदान सिंह भाटी, प्रो. सुधा चौधरी, प्रो. आर.एन. व्यास, प्रो. सुरेन्द्र कटारिया, प्रो. विशाल विक्रम, प्रो. बी. एन. महतो, राजस्थान कॉलेज शिक्षा के संयुक्त निदेशक डॉ. के.एल. सिराधना, रूक्टा के महामंत्री विजय ऐरी, ए.आई. फुक्टों के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. घासीराम, रूक्टा संयुक्त सचिव प्रो. रमेश बैरवा, संगठन मंत्री प्रो. बनय सिंह, प्रो, अरविन्द वर्मा, प्रो, शक्तिसिंह, प्रो. धर्मेन्द्र चाहर, प्रो. भरतलाल मीणा आदि ने भी भाग लिया। **भवदीय**

(डॉ. पयोद जोषी)
सह आचार्य
मा.ला. वर्मा राजकीय महाविद्यालय ,भीलवाड़ा

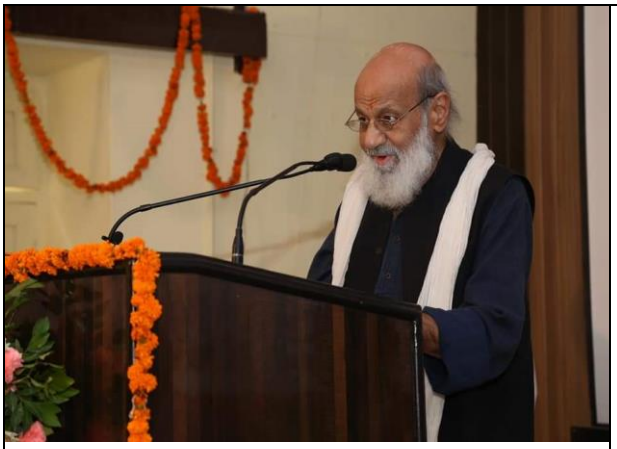

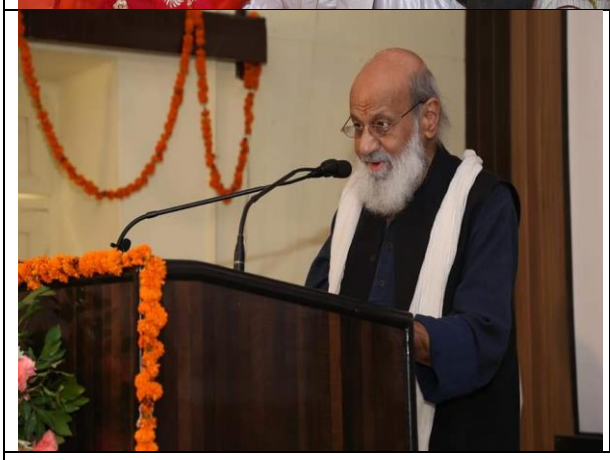

International Conference on
EMBRACING THE OTHER: REDISCOVERING
THE POWER OF NON-VIOLENCE
SEPTEMBER, 2019

MAHATMA GANDHI AND THE
(On the Occasion of 150th Birth Anniversary
20-21 SEPTEMBER,
Anthropological
ORGANISED BY :
Prof. Subrata Mukherjee